मासिक पत्र- अक्तूबर 2020 (आश्विन मास) अंक-4

श्रीकृष्णायन देशी गोरक्षा एवं गोलोक धाम सेवा समिति हरिद्वार

।। गावो विश्वस्य मातरः ।।

श्रीकृष्णायन

पर्यावरण और मानव की सेहत से खेलता कीटनाशकों और रसायनों का जहर

यों तो प्रकृति इंसान की हर जरूरत को पूरा कर सकती है, लेकिन लालच के आगे प्रकृति भी बेबस है। दरअसल मानवीय लालच एक ऐसी अंधी खाई है जिसका पेट भरना किसी के भी वश में नहीं है। यही वजह है कि ज्यादा से ज्यादा फसल और मुनाफा कमाने के लालच में खेतीबाड़ी में अंधाधुंध खाद व कीटनाशकों के प्रयोग का जो सिलसिला शुरू हुआ था, वह आज तक जारी है। परिणामस्वरूप आज मिट्टी, फल, सब्जी, पानी और यहां तक कि हवा भी इन कीटनाशकों के जहर की गिरफ्त में आ चुके हैं।

देश में कैंसर रोगियों की संख्या बढ़ना, किडनी से जुड़ी बीमारियों में इजाफा, हेल्थ इंडेक्स में भारत का गिरता स्तर और हर उम्र व वर्ग के रोगियों की संख्या में जो इजाफा हो रहा है, वह सब इसी का परिणाम है। एक दौर था जब रसोई में कोई सब्जी बनती थी तो सारा घर महक उठता था। उस

नवरात्रि में गोमाता का पौराणिक महत्व

नवरात्र यानी 9 विशेष रात्रियां। इस पावन मौके पर शक्ति के 9 रूपों की उपासना की जाती है। शारदीय नवरात्रि मां भगवती की उपासना के साथ गोसेवा की महिमा का विशेष महत्व है। हिंदू सनातन धर्म में गाय को संसार का सबसे पवित्र प्राणी कहा गया है। जब पृथ्वी पर जीवन उत्पन्न नहीं हुआ था, उससे भी पहले से गाय इस ब्रह्मांड का प्रमुख हिस्सा रही है। हमारे धर्म ग्रंथों, वेदों, पुराणों में कामधेनु गाय का उल्लेख मिलता है, जो संसार की प्रत्येक वस्तु प्रदान करने की क्षमता रखती थी। गरुड़ पुराण में भी गाय का जिक्र मिलता है। उसमें कहा गया है कि मृत्यु के पश्चात आत्मा को वैतरणी नदी पार करने की आवश्यकता होती है और यदि उस मनुष्य ने जीवित रहते हुए गोदान किया है तो वह गाय की पूंछ पकड़कर वैतरणी पार कर जाता है। देशी गाय मानव-जाति के लिए प्रकृति का अनुपम वरदान है। जिस घर में गाय की सेवा हो, वहां पुत्र-पौत्र, धन, विद्या, सुख आदि जो भी चाहिए मिल सकता है। महर्षि अत्रि ने कहा है, जिस घर में सवत्सा धेनु (बछड़े वाली गाय) न हो, उसका मंगल-मांगल्य कैसे होगा?

गाय का घर में पालन करने से घर की सर्व बाधाओं और विघ्नों का निवारण हो जाता है। विष्णु पुराण में आता है कि जब भगवान श्रीकृष्ण ने पूतना के विषयुक्त दुग्ध का पान करते समय उसके प्राणों को भी पी लिया तब वह मृत अवस्था में महाभयंकर रूप धारण कर पृथ्वी पर गिर पड़ी। इससे भयभीत यशोदा मां ने गाय की पूंछ घुमाकर श्रीकृष्ण की नजर उतारी और सबके भय का निवारण किया।

नवरात्रि के इस पावन और त्योहारी मौके पर आप सब लोग भी गोमाता की सेवा कर अपने जीवन में सुख-शांति और संपन्नता की सौगात पाएं।

ऑर्गेनिक होम गार्डनिंग किट से पाएं खुशहाल और स्वस्थ जिंदगी

मैं आपसे एक सवाल करना चाहता हूं, क्या आप शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के बिना एक खुशहाल जीवन जीने की सोच सकते हैं?

निश्चित रूप से आपका उत्तर नहीं होगा क्योंकि जीवन जीने के लिए आहार और विहार का शुद्ध होना बहुत जरूरी है। आहार से मेरा मतलब जो आप अपने भोजन में खाते हैं जैसे फल, सब्जियां, दूध, दाल-चावल, गेंहू आदि व विहार से मतलब जिस वातावरण में सांस लेते हैं यानी हमारा पर्यावरण। अगर ये दोनों शुद्ध हैं तो आप सौ फीसदी स्वस्थ हैं और अस्पतालों के लंबे-चौड़ें बिलों और बीमारियों से मुक्ति पा सकते हैं।

आज जो फल, सब्जी, दाल व रोटी आदि आपकी थाली में पहुंच रहे हैं, उसमें कई विषैले तत्वों की मात्रा मौजूद होती है जो सीधे आपके शरीर के अंदर पहुंचते हैं और कई बीमारियों को उत्पन्न करते हैं। इन फल सब्जियों को उगाने में कई कीटनाशकों का प्रयोग किया जाता है। अगर हम जैव आधारित खाद व कीटनाशकों का उपयोग करें तो अपनी और मिट्टी दोनों की सेहत सुधार सकते हैं।

इन बातों के मद्देनजर मानव जीवन को सुखमय बनाने और जहरीले कैमिकल्स से आपको मुक्ति दिलाने के लिए उत्तराखंड के हरिद्वार में स्थित श्री कृष्णायन देशी गोरक्षा गोशाला, जो मानव जाति और पर्यावरण के कल्याण के लिए देशी गोवंश की रक्षा के लिए निरंतर सेवा में रत है, ने अपने भक्तों और शुभचिंतकों के अनुरोध पर सस्ती कीमत पर होम गार्डनिंग ग्रोइंग किट लॉन्च की है।

किट की खासियतः -

- इसे देशी गोवंश के गोबर और मूत्र से बनाया जाता है।
- 100% कार्बनिक है।
- लैब में गुणवत्ता परीक्षण और फील्ड परीक्षण पूर्ण।
- सस्ती कीमत।

होम गार्डनिंग ग्रोइंग किट एम.आर.पी.

मात्र 400 रुपए (अतिरिक्त कूरियर शुल्क मात्र 100 रुपए)

किट सामग्रीः

- देसी गो डंग खाद (एक जोड़ा नीम कर्नेल पाउडर के साथ) - कुल मात्रा- 2 किलोग्राम।
- जैव उर्वरक - 100 मिलीलीटर (NFB, PSB, KMB, VAM)।
- ग्रोथ प्रमोटर - 50 मिली. ।
- नीम तेल 1500 पीपीएम -50 मिली. ।

निर्देशः इस्तेमाल में बेहद आसान इस किट को कोई भी घर की छत पर या किचन गार्डन में इस्तेमाल कर सकता है। एक किट में उपलब्ध सामग्री 25 पौधों के लिए पर्याप्त है। 20 दिनों के बाद इसे दोबारा पौधों पर प्रयोग करें।

अनुमानित लागतः 1 रुपए / - प्रति पौधा / दिन।

परिवार के लिए पर्याप्तः उगाई गई सब्जियां 2-3 महीनों के लिए 4 सदस्यों के परिवार को खिलाने के लिए पर्याप्त होंगी।

यूजर मैनुअलः वेबसाइट/मोबाइल एप्लिकेशन पर यूजर मैनुअल उपलब्ध कराया जाएगा ताकि युवा घर पर भी सब्जियां उगा सकें। इसके अलावा पंजीकरण, ऑनलाइन ऑर्डर, भुगतान और कूरियर ट्रैकिंग आदि की प्रक्रिया भी आसान हो जाएगी।

होम गार्डनिंग ग्रोइंग किट को इस्तेमाल करने के इच्छुक सदस्य 8755955000 पर अपना नाम, स्थान, पिन कोड, वैकल्पिक मोबाइल नंबर, ईमेल आदि विवरण एसएमएस कर सकते हैं ताकि पहले 1000 सदस्यों को लॉन्चिंग ऑफर का लाभ मिल सके।

सब्जी का स्वाद और रोटियों की महक आज भी मन में बसी हुई है। लेकिन आज जो खाना घर में बनाया जाता है, उसकी महक और स्वाद में बहुत अंतर आ गया है। क्या कारण है कि धीरे-धीरे अनाज एवं सब्जियों में से वो कभी न भुलाया जाने वाला स्वाद लुप्त होता जा रहा है?

दरअसल सब्जियों एवं खाद्यान्नों के मूल स्वाद और पौष्टिकता को कीटनाशकों और रसायनों ने खत्म कर दिया है। कृषि रसायनों ने हमारे मिट्टी, पानी, हवा और संपूर्ण पर्यावरण को प्रदूषित कर दिया है। जिसका सबसे गंभीर प्रभाव हमारे स्वास्थ्य पर बढ़ती बीमारियों के तौर पर देखने को मिल रहा है।

विडंबना यह है कि देश में हरित क्रांति का झंडा लहराने वालों ने हमारे खेतों व उत्पादों को विषैले रसायनों का गुलाम बना दिया है। नतीजतन एक बारगी तो लगता है कि पैदावार बढ़ गई है, लेकिन जल्दी ही इसके कारण जमीन के बंजर होने और उसका भक्षण करने वालों को शारीरिक विसंगतियों की चपेट में आने का सामना करना पड़ता है। इससे खेती की लागत बढ़ रही है, साथ ही मानव संसाधन का नुकसान तथा स्वास्थ्य पर खर्चों में इजाफा भी हो रहा है।

आमतौर पर यह माना जाता है कि ज्यादा मात्रा में रासायनिक खाद एवं कीटनाशक इस्तेमाल करने से उत्पादन बढ़ाया जा सकता है और उत्पादन बढ़ने से किसान का मुनाफा बढ़ सकता है। सरकार भी किसानों को वैज्ञानिक ढंग से खेती करने की सलाह देती है, लेकिन इस वैज्ञानिक विधि का अर्थ

सिर्फ और सिर्फ रासायनिक खाद और कीटनाशकों के इस्तेमाल तक ही सीमित होता है। विश्व बैंक की एक स्टडी के मुताबिक दुनिया में 25 लाख लोग प्रतिवर्ष कीटनाशकों के दुष्प्रभावों के शिकार होते हैं, उसमें से 5 लाख लोग तकरीबन काल के गाल में समा जाते हैं।

कीटनाशकों व रसायनों के चिंताजनक परिणाम

मौजूदा स्थिति इतनी दुखद है कि अब नदियों के किनारे विष-मानव पनप रहे हैं जो कथित विकास की कीमत चुकाते हुए असमय काल के गाल में समा रहे हैं। हमारे देश में हर साल कोई दस हजार करोड़ रुपए के कृषि-उत्पाद खेत या भंडार गृहों में कीट-कीड़ों के कारण नष्ट हो जाते हैं। इस बर्बादी से बचने के लिए भी कीटनाशकों का इस्तेमाल बढ़ा है। हालांकि इस त्वरित समाधान के दूरगामी परिणाम बहुत अच्छे नहीं मिले हैं। जहां सन 1950 में इसकी खपत 2000 टन थी, आज कोई 90 हजार टन जहरीली दवाएं, देश के पर्यावरण में घुल-मिल रही हैं। इसका कोई एक तिहाई हिस्सा विभिन्न सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों के अंतर्गत छिड़का जा रहा है। सन 1960-61 में केवल 6.4 लाख हेक्टेयर कृषि क्षेत्र में कीटनाशकों का छिड़काव होता था। 1988-89 में यह रकबा बढ़कर 80 लाख हो गया और आज इसके कोई डेढ़ करोड़ हेक्टेयर होने की आशंका है। ये कीटनाशक जाने-अनजाने में पानी, मिट्टी, हवा, जन-स्वास्थ्य और जैव विविधता को बुरी तरह प्रभावित कर रहे हैं।

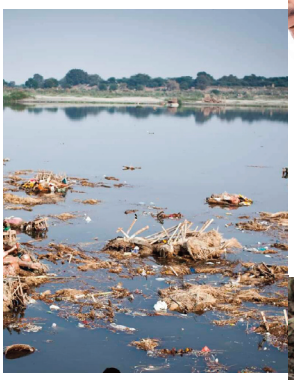

लिहाजा पारिस्थितिकी संतुलन बिगड़ रहा है। कई कीटों की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ गई है और वे दवाओं को हजम कर रहे हैं। इसका असर खाद्य श्रृंखला पर भी पड़ रहा है और उनमें दवाओं व रसायनों की मात्रा खतरनाक स्तर पर आ गई है। एक बात और, इस्तेमाल की जा रही दवाइयों का महज 10 से 15 फीसदी हिस्सा ही असरकारक होता है, बाकी जहर के रूप में मिट्टी, भूगर्भ जल, नदी-नालों का हिस्सा बन जाता है।

दिल्ली, मथुरा, आगरा जैसे शहरों में पेयजल सप्लाई के मुख्य स्रोत यमुना नदी के पानी में डीडीटी और बीएसजी की मात्रा जानलेवा स्तर पर पहुंच गई है। यहां उपलब्ध शाकाहारी खाद्य सामग्री में इन कीटनाशकों की खासी मात्रा पाई गई है। एक औसत भारतीय के दैनिक भोजन में लगभग 0.27 मिग्रा. डीडीटी पाई जाती है। दिल्ली के नागरिकों के शरीर में यह मात्रा सबसे अधिक पाई गई है। क्योंकि यहां उपलब्ध गेहूं में 1.6 से 17.4 भाग प्रति दस लाख, चावल में 0.8 से 16.4 भाग प्रति 10 लाख, मूंगफली में 3 से 19.1 भाग प्रति दस लाख मात्रा डीडीटी मौजूद है। जबकि महाराष्ट्र में बोतलबंद दूध के 70 नमूनों में डीडीटी और एल्ड्रिन की मात्रा 4.8 से 6.3 भाग प्रति दस लाख पाई गई है।

एक संस्था ने देश के छह अलग-अलग राज्यों के जिलों में बच्चों के मानसिक विकास पर कीटनाशकों के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए शोध किया। ये जिले थे, भटिण्डा (पंजाब), भरूच (गुजरात), रायचूर (कर्नाटक), यवतमाल (महाराष्ट्र), थेनी (तमिलनाडु) और वारंगल (आन्ध्र प्रदेश)। इस रिपोर्ट में बताया गया है कि कीटनाशकों के अंधाधुंध, अवैज्ञानिक व असुरक्षित इस्तेमाल के कारण भोजन और जल में रासायनिक जहर की मात्रा बढ़ रही है। लिहाजा इसका सेवन करने वाले बच्चों का मानसिक विकास अपेक्षाकृत धीमा है। इस सबके अलावा कीटनाशकों के कारण जैव विविधता को होने वाले नुकसान की भरपाई तो किसी भी तरह संभव नहीं हैं।

विदेशियों की सोची-समझी चाल

गौरतलब है कि सभी कीट, कीड़े या कीटाणु नुकसानदायक नहीं होते हैं लेकिन बगैर सोचे-समझे प्रयोग की जा रही दवाओं के कारण पर्यावरण मित्र कीट-कीड़ों की कई प्रजातियां जड़ से नष्ट हो गई हैं। सनद रहे कि विदेशी पारिस्थितिकी के अनुकूल दवाईयों को भारत के खेतों के परिवेश के अनुरूप जांच का कोई प्रावधान नहीं है। विषैले और जनजीवन के लिए खतरा बने इन हजारों कीटनाशकों पर विकसित देशों ने अपने यहां तो पाबंदी लगा दी है, लेकिन अपने व्यावसायिक हितों को साधने के लिए इन्हें भारत में उड़ेलना जारी रखा है।

अमेरिका में हुए शोध से ज्ञात होता है कि जब कीटनाशी रसायनों का पेड़-पौधों, सब्जियों और फलों पर छिड़काव किया जाता है, तो इन रसायनों की महज 1 % मात्रा ही सही लक्ष्य तक प्रभावी हो पाती है, शेष 99 % रसायन पर्यावरण को प्रदूषित करता है।

हमारे देश में फसलों पर हर वर्ष 25 लाख टन पेस्टीसाइड का प्रयोग होता है। इस प्रकार हर वर्ष 10 हजार करोड़ रुपए खेती में इस्तेमाल होने वाले पेस्टीसाइड्स पर खर्च हो जाते हैं। आज खतरा केवल रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के बढ़ते प्रयोग से ही नहीं है, बल्कि खाद्य पदार्थों मे जिस तरह मिलावट का धंधा फल-फूल रहा है, वह मानवीय स्वास्थ्य के लिए एक गंभीर खतरा बन गया है।

आज दिल का दौरा, मधुमेह, रक्तचाप एवं अन्य कई प्रकार की बीमारियां आम होती जा रही हैं। इसका एक बहुत बड़ा कारण यह है कि आज हम जो भी खाते हैं, उसमें रासायनिक तत्वों की अधिकता इतनी ज्यादा होती है कि हमारा खाना धीमा जहर बन चुका है।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर के वैज्ञानिकों के अनुसार गेंहू की फसल में उर्वरकों का प्रयोग बढ़ने से रोटी में भी उर्वरक अवशेष बढ़ते जा रहे हैं। यही कारण है कि कृषि रसायन शरीर में रक्त के साथ बह रहे हैं। इसका प्रमाण पंजाब के भटिंडा और मुक्तसर जिले हैं, जहां के ग्रामीणों की रक्त की जांच करने में 13 तरह के कीटनाशक पाए गए हैं।

बायो कंपोस्ट और ऑर्गेनिक खेती अपनाएं

हमारा देश सदियों से खेती करता आ रहा है। हमारे पास कम लागत में अच्छी फसल उगाने का पारंपरिक ज्ञान है। लेकिन यह ज्ञान जरूरत तो पूरी कर सकता है, लालसा को नहीं। इंटरनेशनल बाजार गुणवत्ता, उपभोक्ता जैसे नारों पर खेती करना चाहता है, जबकि हमारी परंपरा धरती को माता और खेती को पूजा मानने की है। हमारे पारंपरिक बीज, गोबर की खाद, नीम, गोमूत्र जैसे प्राकृतिक तत्वों के कीटनाशक शुरुआत में शायद पहले से कम फसल दें, लेकिन यह तय है कि इनसे जहर नहीं उपजेगा। खेती के लिए देशी गाय के गोबर को अमृत समान माना जाता था। इसी अमृत के कारण भारत-भूमि हजारों वर्षों से सोना उगलती आ रही है और गोमूत्र और गोबर फसलों के लिए बहुत उपयोगी कीटनाशक सिद्ध हुए हैं।

कीटनाशक के रूप में गोबर और गौमूत्र के इस्तेमाल को बढ़ावा देना चाहिए,

गोशाला की प्रमुख गतिविधियां

श्रीकृष्णायन देशी गोरक्षा एवं गोलोक धाम सेवा समिति (हरिद्वार) की एक नई शाखा बनहारी (रानी घाट) में खुल गई है। करीब दस हजार देशी गोमाताओं की सेवा-क्षमता से लैस इस नई गोशाला के खुलने से अब और अधिक संख्या में देशी गायों की सेवा रक्षा की जा सकेगी।

उपलब्धियां

- गोमाता के भोजन और पोषण के लिए इस बार तीन सौ टन भूसा खरीदा गया है ताकि देशी गोवंश को वर्ष भर पौष्टिक आहार मिलता रहे।
- गोशाला के निकट रहने वाले निवासियों को इस आपातकाल के समय मुफ्त राशन का वितरण किया गया।
- गोमाताओं के लिए आवश्यक सुविधाओं से लैस 1500 देशी गायों के लिए 2 बड़े टीन शेड का निर्माण

देशी गाय के संरक्षण और देखभाल के लिए एक ट्रेनिंग प्रोग्राम का आयोजन।

नई योजनाएं हुईं साकार

- उत्तराखंड में पिली पड़ाव गोशाला
- रानीघाटी में बन्हेरी गोशाला
- गैंडीखाता, हरिद्वार में दो हजार देशी गायों के बैठने के लिए टीनशेड की व्यवस्था।

सभी दानदाताओं से अपील

कोराना वायरस की इस महामारी का असर सभी लोगों पर हुआ है। अर्थव्यवस्था से लेकर कामकाज तक पर इसका व्यापक असर हुआ है। इसके असर से सभी प्राणी प्रभावित हैं। हजारों गोमाताओं की सेवा के लिए जो दान आप दानवीरों द्वारा किया जा रहा था, वह इस समय अति-आवश्यक है। क्योंकि गोरक्षकों और गोमाताओं के भोजन का निर्वाह करना भी जरूरी है। हमारी आप सभी प्रबुद्धजनों और दानवीरों से यही अपील है कि संकट की इस घड़ी में धैर्य धारण करके सुरक्षित रहें और दान करते रहें क्योंकि संकट में दान देने वालों का प्रभु भी साथ देता है।

इस समय हमें आपके सहयोग की अति-आवश्यकता है, अतः आप स्वयं आगे बढ़ें और अपने परिचितजनों को भी गोसेवा करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए कम से कम एक गोमाता की सेवा का संकल्प लेकर ईसीएस फार्म भरकर मासिक/वार्षिक अपना सहयोग दें।

क्योंकि इनमें रासायनिक उर्वरकों के दुष्प्रभावों के बिना खेतिहर उत्पादन बढ़ाने की अपार क्षमता है। इसके बैक्टीरिया अन्य कई जटिल रोगों में भी फायदेमंद होते हैं। गोमूत्र अपने आस-पास के वातावरण को भी शुद्ध रखता है। कृषि में रासायनिक खाद्य और कीटनाशक पदार्थ की जगह गाय का गोबर इस्तेमाल करने से जहां भूमि की उर्वरता बनी रहती है, वहीं उत्पादन भी अधिक होता है। दूसरी ओर पैदा की जा रही सब्जी, फल या अनाज आदि फसलों की गुणवत्ता भी बनी रहती है। अगर खेती में भी गोवंश का इस्तेमाल होता है तो जुताई करते समय गिरने वाले गोबर और गोमूत्र से भूमि में स्वतः खाद डलती जाती है।

इतना ही नहीं प्रकृति के 99% कीट खेती के लिए लाभदायक हैं। गोमूत्र या खमीर हुए छाछ से बने कीटनाशक इन सहायक कीटों को प्रभावित नहीं करते। एक गाय का गोबर 7 एकड़ भूमि को खाद और मूत्र 100 एकड़ भूमि की फसल को कीटों से बचा सकता है। केवल 40 करोड़ गोवंश के गोबर व मूत्र से भारत में 84 लाख एकड़ भूमि को उपजाऊ बनाया जा सकता है।

इसलिए अगर हमें इन कीटनाशकों के जहर से बचकर स्वस्थ रहना है तो आज से ही पारंपरिक व ऑर्गेनिक खेती और उसके उत्पादों को उपयोग करना होगा, तभी हम अपनी सेहत के साथ-साथ पर्यावरण की सेहत भी सुधार पाएंगे।

अन्य शाखाएं एवं सेवा प्रकल्प

उत्तराखंड

श्रीकृष्णायन देशी गोरक्षा एवं गोलोक धाम सेवा समिति
गांव-बसोचांदपुर (गैंडीखाता)
ज़िला-हरिद्वार, उत्तराखंड
पिन कोड-246663

श्रीकृष्णायन देशी गोरक्षा एवं गोलोक धाम सेवा समिति
पोस्ट ऑफिस, पीली पड़ाव,
जिला - हरिद्वार

बायो-सीएनजी प्लांट
पोस्ट ऑफिस, नौरंगाबाद,
जिला - हरिद्वार
khad@krishnayangauraksha.org

उत्तर प्रदेश

गांव-सबलगढ़ (भागूवाला)
जिला - बिजनौर, उत्तर प्रदेश
पिन कोड-246732

गांव- बरला
टोल टैक्स के पास , बरला हापुड़ हाईवे
जिला - मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश)
पिन- 246732

मध्य प्रदेश

आदर्श गोशाला
लाल टिपारा , ग्वालियर, मध्य प्रदेश
पिन कोड-474006

श्री रेवा भागीरथी गोशाला खेरीघाट
रामगढ़, जिला - खरगोन (मध्य प्रदेश)

श्री कृष्णायन देशी गोरक्षा गोलोक धाम सेवा समिती
राम जानकी मंदिर, रानीघाट (बरहाना)
जिला - ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

स्वामी ईश्वर दास जी महाराज
(अध्यक्ष)
मोबाइल: 9412902268

स्वामी गणेशानंद जी महाराज
(सचिव)
मोबाइल: 8958942681

श्रीकृष्णायन देशी गोरक्षा एवं गोलाक धाम सेवा समिति

प्रधान कार्यालय
हरिपुर कलां निकट प्रेम विहार चौक, हरिद्वार
(उत्तराखंड) फोन: +91 9760202306

Visit us at : www.krishnayangauraksha.org
E-mail : enquiry@krishnayangauraksha.org
Facebook : www.facebook.com/krishnayangauraksha